6

बहुव्रीहि समास
समासान्त प्रत्यय निपात व्यवस्थादि

इस पाठ में बहुव्रीहि समास के अवशिष्ट अंश का आलोचन होता है। बहुव्रीहि समास में समासान्त प्रत्यय विधायक सूत्र और समासान्त आदेश विधायक सूत्र हैं उनकी यहाँ आलोचना की जा रही है। इसके बाद कभी बहुव्रीहि समास में निपातन होता है उसका वर्णन किया जा रहा है। बहुव्रीहि में पूर्वनिपात विषय में यहाँ आलोचना हो रही है। इसके बाद समास विधायक सूत्रवर्णनावसर पर उसके उदाहरणों में विसर्ग के आदेश विधान के लिए जो सूत्र अपेक्षित हैं उनका भी यहाँ संग्रहण किया गया है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे–

- बहुव्रीहि में समासान्त प्रत्यय विधायक सूत्रों को जान पाने में;
- बहुव्रीहि में समासान्त आदेश विधायक सूत्रों को जान पाने में;
- बहुव्रीहि में निपातन को जान पाने में;
- बहुव्रीहि पूर्वनिपात विधायक सूत्रों को जान पाने में;
- बहुव्रीहि की उपयोगिता से विसर्ग के आदेश विधायक सूत्रों को जान पाने में।

टिप्पणियाँ

(6.1) ''बहुव्रीहौ सक्थ्यक्ष्णोः स्वाङ्गात् षच्'' (5.4.113)

सूत्रार्थ–स्वाङ्गवाची सक्थ्यन्त बहुव्रीहि में समासान्त तद्धितसंज्ञक षच् प्रत्यय होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से समासान्त षच् प्रत्यय होता है। चतुष्टयपदी इस सूत्र में बहुव्रीहौ यहाँ पञ्चमी अर्थ में सप्तमी है। सक्थ्यक्ष्णोः यहाँ पञ्चम्यर्थ में षष्ठी है। ''व्यत्ययो बहुलम्'' छन्दसि वचन से? स्वाङ्गात् पञ्चमी एकवचनान्त पद है और षच् यह प्रथमा एकवचनान्त पद है। ''प्रत्ययः'', ''परश्च'', ''तद्धिताः'', ''समासान्ताः'' ये अधिकृत सूत्र हैं। ''सक्थ्यक्ष्णोः'' यहाँ पर तदत्तविधि में सक्थ्यक्ष्यन्ताद्'' प्राप्त होता है।

''स्वाङ्गात् सक्थ्यक्ष्णोः बहुव्रीहौ'' इसका अर्थ हे स्वाङ्गवाची सक्थ्यक्ष्यन्त से बहुव्रीहि समास होता है। और सूत्रार्थ आता है–स्वाङ्गवाची सक्थ्यक्ष्यत्त बहुव्रीहि का समासान्त तद्धित संज्ञक षच् प्रत्यय होता है।

उदाहरण–स्वाङ्गवाचीसक्थ्यन्त बहुव्रीहि का उदाहरण है तावत् दीर्घसक्थः। दीर्घे सक्थिनी यस्य स इस लौकिक विग्रह में दीर्घ औ सक्थि औ इस अलौकिक विग्रह में ''अनेकमन्य पदार्थे'' इस सूत्र से बहुव्रीहि समास होता है। इसके बाद ''सप्तमी विशेषणे बहुव्रीहो'' इससे विशेषण का दीर्घ औ का पूर्व निपात होने पद दीर्घ औ सक्थि औ होने पर समास के ''कृन्तद्धितसमासाश्च'' इससे प्रातिपदिक संज्ञा होने पर ''सुपोधातु प्रातिपदिकयोः'' इससे प्रातिपदिक अवयव का सुप् के औ प्रत्यय का (दोनों) लोप होने पर दीर्घसक्थि होता है। तब स्वाङ्गवाची दीर्घसक्थि से बहव्रीहि के प्रकृत सूत्र से समासान्त षच् प्रत्यय होता है। षचयोः (दोनों प्रत्ययों) क्रमानुसार ''षः प्रत्ययस्थ'' इससे ''हलन्त्यम्'' इससे इत्संज्ञा होने पर ''तस्यलोपः'' इससे इन दोनों का लोप होने पर दीर्घसक्थि अ होता है। इसके बाद ''यचि भम्'' इससे पूर्व की दीर्घसक्थि शब्द की भसंज्ञा होने पर ''यस्थेति'' इससे भसंज्ञक दीर्घसक्थि अकार के अन्त्य इकार का लोप होने पर सर्व संयोग होने पर दीर्घसक्थशब्दः निष्पन्न होता है। इसके बाद सु प्रत्यय दीर्घसक्थः रूप होता है।

(6.2) ''द्वि त्रिभ्यां ष मूर्ध्नः'' (5.4.115)

सूत्रार्थ–बहुव्रीहि समास में द्वि, त्रि, परे मूर्ध्न समासान्त तद्धितसंज्ञक ष प्रत्यय होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से समासान्त ष प्रत्यय होता है। त्रिपदात्मक इस सूत्र में ''द्वित्रिभ्याम्'' यह पञ्चमी द्विवचनान्त पद है। ''ष'' यह लुप्त प्रथमा एकवचनान्त पद है। ''मूर्ध्नः'' यह पञ्चमी एकवचनान्त पद है।'' बहुव्रीहौ सक्थ्यक्ष्णोः स्वाङ्गात् षच्'' इससे बहुव्रीहि में पद की अनुवृत्ति होती है। ''प्रत्ययः'', ''परश्च'', ''तद्धिताः'', ''समासान्ताः'' ये अधिकृत सूत्र हैं। द्विश्च त्रिश्च द्वित्री, ताभ्यां द्वित्रिभ्याम् यहाँ इतरेतर द्वन्द समास है। और सूत्रार्थ आता है कि ''बहुव्रीहि समास में द्वि त्रि शब्दों से परे मूर्ध्न समासान्त तद्धितसंज्ञक ष प्रत्यय होता है।

उदाहरण–इस सूत्र का उदाहरण है तावत् द्विमूर्घः। दौ मूर्धानौ यस्य स इस लौकिक विग्रह में द्वि औ मूर्घन औ इस अलौकिक विग्रह में ''अनेकमन्यपदार्थे'' इस सूत्र से बहुव्रीहि समास होता है। इसके बाद ''सप्तमी विशेषणे बहुव्रीहौ'' इससे विशेषण के द्वि औ का पूर्व निपात होने पर द्वि औ मूर्घन औ होने पर समास की ''कृतद्धित्तसमासाश्च'' इससे प्रातिपदिक संज्ञा होने पर ''सुपो धातुप्रातिपदिकयोः'' इससे प्रातिपदिक अवयव के सुप् के प्रत्यय (दोनों) का लोप होने पर द्विमूर्घन होता है। द्विमूर्घन बहुव्रीहि संज्ञक प्रकृत सूत्र से समासान्त ष प्रत्यय होने पर बकार के ''षः प्रत्ययस्य'' इससे इत्संज्ञा होने पर ''तस्यलोपः'' इससे लोप होने पर द्विमूर्धन अ होता है। इसके बाद पूर्वपद का द्विमूर्घन शब्द के ''यचिभम्'' इससे भसंज्ञा होने पर ''नस्तद्धिते'' इससे भसंज्ञक द्विमूर्घन के टि के अन् का लोप होने पर सर्वसंयोग से द्विमूर्घ। शब्द निष्पन्न होता है। इसके बाद सु प्रत्यय होने पर द्विमूर्घः रूप बना। इसी प्रकार त्रिमूर्घः इस सूत्र का उदाहरण है।

पाठगत प्रश्न-1

1. ''बहुव्रीहौ सक्थ्यक्ष्णोः स्वाङ्गात् षच्'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?
2. दीर्घसक्थः यहाँ विग्रह क्या है?
3. ''बहुव्रीहौ सक्थ्यक्ष्णोः स्वाङ्गात षच्'' इस सूत्र के स्वाङ्गवाची अक्ष्यत्त का उदाहरण क्या है?
4. ''द्वित्रिभ्यां ष मूर्घ्नः'' इस सूत्र का अर्थ क्या है?
5. ''द्वित्रिभ्यां ष मूर्घ्नः'' इस सूत्र का उदाहरण क्या है?

(6.3) ''अन्तर्बहिभ्यां च लोम्नः'' (5.4.117)

सूत्रार्थ–बहुव्रीहि समास में अन्तः (अन्दर), बहि (बाहर) शब्दों के परे लोम्न समासान्त तद्धित संज्ञक शब्द को अप् प्रत्यय होता है।

सूत्रव्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से समासान्त अप् प्रत्यय होता है। त्रिपदात्मक इस सूत्र में अन्तर्बहिभ्याम् यह पञ्चमी द्विवचनान्त पद है। ''च'' अव्यय पद है। चकार से ''अप्पूरणीप्रमाण्योः'' इस सूत्र से अप् की अनुवृत्ति होती है। लोम्नः यह पञ्चमी एकवचनान्त है। ''बहुव्रीहौ सक्थ्यक्ष्णोः स्वाङ्गात् षच्'' इससे बहुव्रीहौ पद की अनुवृत्ति आती है। ''प्रत्ययः'', ''परश्च'', ''तद्धिताः'', ''समासाक्ताः'' ये अधिकृत सूत्र हैं। और सूत्रार्थ आता है–''बहुव्रीहि समास में (अन्तर्बहिर्भ्या) अन्तः और बहिः शब्दों से परे लोमन् समासात्त तद्धितसंज्ञक अप् प्रव्यय होता है।

उदाहरण–इस सूत्र का उदाहरण है तावद् अन्तर्लोगः। अन्तः लोमानि यस्य स इस लौकिक विग्रह में अन्तर लोमन् औ इस अलौकिक विग्रह में ''अनेकमन्यपदार्थे'' इस सूत्र से बहुव्रीहि

समास होता है। इसके बाद प्रक्रियाकार्य में समास के प्रातिपदिकत्व से सुप् का लोप होने पर अन्तर्लोमन् होता है। अन्तर्लोमन् शब्द का ''यचिभम्'' इससे भसंज्ञा होने पर ''नस्तद्धिते'' इससे भसंज्ञक अन्तर्लोमन् के टि (अन्) का लोप होने पर सर्वसंयोग होने पर अन्तर्लोम शब्द निष्पन्न होता है। इसके बाद सु प्रत्यय होने पर अन्तर्लोमः रूप बना। उसी प्रकार की बहिर्लोमः सूत्र का उदाहरण है।

(6.4) ''पादस्य लोपोऽहस्त्यादिभ्यः''

सूत्रार्थ–बहुव्रीहि समास में हस्ति आदि से वर्जित उपमान से पर पाद शब्द का समासान्त लोप होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से समासान्तलोप होता है। त्रिपदात्मक इस सूत्र में पादस्य लोपः अहस्त्यादिभ्यः पदच्छेद है। पादस्य षष्ठी एकवचनान्त पद है। लोपः प्रथमा एकवचनान्त पद है। अहस्त्यादिभ्यः यह पञ्चमी बहुवचनान्त पद है। ''बहुव्रीहौ सक्थ्यक्ष्णोः स्वाङ्गात् षच्'' इससे बहुव्रीहि में पद की अनुवृत्ति आती है। ''उपमानाच्च'' इस सूत्र से उपमानात् की अनुवृत्ति आती है। ''समासान्ताः'' यह अधिकृत है। न हस्त्यादयः अहस्त्यादयः तेभ्यः अहस्त्यादिभ्यः यहाँ नञ्तत्पुरुष समास है। अहस्त्यादिभ्यः उपमानात् पादस्य समासान्तः लोपः बहुव्रीहौ यह अन्वय है। और सूत्रार्थ आता है–''बहुव्रीहि समास में हस्त्यादि वर्जित उपमान से परे पादशब्द का समासान्त का लोप होता है।

''अलोऽन्त्यस्य'' इस परिभाषा से यह समासान्त लोप पादशब्द के अन्त्य अकार का होता है।

उदाहरण–इस सूत्र का उदाहरण है–तावत् व्याघ्रपात्। व्याघ्रपादौ इव पादौ यस्य स इस लौकिक विग्रह में व्याघ्रपाद् औ पाद औ इस अलौकिक विग्रह में ''अनेकमन्यपदार्थे'' इससे बहुव्रीहि समास होता है। इसके बाद ''सुपो धातुप्रातिपदिकयोः'' इससे सुप् का लोप होने पर व्याघ्रपाद पाद इस स्थिति में ''सप्तम्युपमानपूर्वपदस्थोत्तरपदलोपश्च'' इस वार्तिक से बहुव्रीहि समास में पूर्वपद का व्याघ्रपादशब्द के उत्तरपद के पादशब्द का लोप होने पर व्याघ्रपादशब्द निष्पन्न होता है। इसके बाद बहुव्रीहि समास में अहस्त्यादि वाचक उपमान व्याघ्रशब्द के विद्यमानत्व से इसके पर पादशब्द के ''अलोऽन्त्यस्य'' परिभाषा से परिष्कृत प्रकृत सूत्र से अन्त्य अकार का लोप होने पर व्याघ्रपाद् शब्द निष्पन्न होता है। इसके बाद पुल्लिंग में सु प्रत्यय प्रक्रिया कार्य में ''वाडवसाने'' इससे वैकल्पिक चर्त्व होने पर व्याघ्रपात् होता है। चर्त्व अभाव पक्ष में व्याघ्रपाद् रूप बना है।

पाठगत प्रश्न-2

6. ''अन्तबर्हिर्भ्यां च लोम्नः'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

7. ''अन्तर्बहिर्भ्यां च लोम्नः'' इस सूत्र का उदाहरण क्या है?

8. ''पादस्य लोपोऽहस्त्यादिभ्यः'' इस सूत्र से क्या होता है।

9. ''पादस्य लोपोऽहस्त्यादिभ्यः'' इस सूत्र का अर्थ क्या है?

10. ''पादस्य लोपोऽहस्त्यादिभ्यः'' इस सूत्र का उदाहरण क्या है?

(6.5) ''संख्यासुपूर्वस्य'' (5.4.140)

सूत्रार्थ–बहुव्रीहि समास में संख्यावाचक पूर्वशब्द का और सु अव्यय पूर्व का पादशब्द के समासान्त का लोप होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से समासान्त का लोप होता है। एकपदात्मक इस सूत्र में संख्यासुपूर्वस्य षष्ठी एकवनात्त पद है। ''पादस्य लोपोऽहस्त्यादिभ्यः'' इस सूत्र से पादशब्द की अनुवृत्ति होती है। ''बहुव्रीहौ सक्थ्यक्ष्णोः स्वाङ्गात् षच्'' इससे बहुव्रीहि में पद की अनुवृत्ति होती है। ''समासान्ताः'' यह अधिकृत सूत्र है। संख्या च सु श्च संख्यासू इतरेतरद्वन्द समास है। संख्यासू पूर्वौ यस्य संख्यासुपूर्वः, तस्यसंख्यायु पूर्वस्य बहुव्रीहि समास है। और सूत्रार्थ आता है–''बहुव्रीहि समास में संख्या वाचकपूर्व का सु अव्ययपूर्व का पादशब्द का समासान्त लोप होता है।

''अलोऽन्त्यस्य'' इस परिभाषा से यह समासान्त लोप पाद शब्द का अन्त्य के अकार का होता है।

उदाहरण–इस सूत्र का उदाहरण है–तावत् द्विपात्। द्वौ पादौ यस्य स (दो पैर हैं जिसके वह) लौकिक विग्रह में द्वि औ पाद औ इस अलौकिक विग्रह में ''अनेकमन्यपदार्थे'' इस सूत्र से बहुव्रीहि समास होता है। इसके बाद ''सप्तमी विशेषणे बहुव्रीहौ'' इस सूत्र से विशेषण के द्वि औ का पूर्व निपात होने पर समास का प्रातिपदिकत्व से ''सुपो धातु प्रातिपदिकयोः'' इससे प्रातिपदिक अवयव के सुबन्त दोनों औ प्रत्ययों का लोप होने पर द्विपाद शब्द निष्पन्न होता है। इसके बाद परिभाषा से परिष्कृत प्रकृत सूत्र से लोप होने पर द्विपात् निष्पन्न होता है। इसके बाद पुल्लिंग में सु प्रत्यय प्रक्रियाकार्य में ''वाडवसाने'' इससे वैकल्पिक चर्त्व होने पर तकार होने पर द्विपात् रूप होता है, और चर्त्व अभाव पक्ष में द्विपात् रूप होता है इसी प्रकार सुपात्, सुपाद् ये दो रूप सिद्ध होते हैं।

पाठगत प्रश्न-3

11. ''संख्यासुपूर्वस्थ'' इस सूत्र से क्या होता है?

12. ''संख्यासुपूर्वस्य'' इस सूत्र का अर्थ क्या है?

13. ''संख्यासुपूर्वस्य'' इस सूत्र का उदाहरण क्या है?

14. ''संख्यासु पूर्वस्थ'' इस सूत्र से विहित लोप अन्त्य का कैसे होता है?

टिप्पणियाँ

(6.6) ''उद्विभ्यां काकुदस्य''

सूत्रार्थ–बहुव्रीहिसमास उत्, द्वि से परे काकुदशब्द का समासान्त लोप होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से समासान्त लोप होता है। द्विपदात्मक इस सूत्र में उद्विभ्याम् यह पञ्चमीद्विवचनान्त पद है। काकुदस्य यह षष्ठीएकवचनान्त पद है। ''ककुदस्यावस्थायां लोप:'' इस सूत्र से लोप की अनुवृत्ति होती है। ''बहुव्रीहौ सक्थ्यक्ष्णो: स्वाङ्गात् षच्'' इससे बहुव्रीहि में पद की अनुवृत्ति होती है। ''समासान्ता:'' यह अधिकृत सूत्र है। उच्च विश्व उद्वी, ताभ्याम् उद्विभ्याम् इतरेतशब्द समास है। उद् वि इन दो निपातों से तात्पर्य है। और सूत्रार्थ होता है-''बहुव्रीहि समास में उद्, वि आदि परे काकुद शब्द के समासान्त का लोप होता है।''

''अलोऽन्त्यस्य'' इस परिभाषा से यह समासान्त लोप काकुदशब्द के अन्त्य अकार का होता है।

उदाहरण–

इस सूत्र का उदाहरण है तावत् उत्काकुत् उद्गतं काकुदं यस्य स इस लौकिक विग्रह में उद्गत सु काकुद सु इस अलौकिक विग्रह में ''प्रादिभ्यो धातुजस्य वाच्यो वा चोत्तरपदलोप:'' इस वार्तिक से बहुव्रीहि समास में, विशेषण का पूर्व निपात होने पर सुप् लोप होने और वार्तिक से पूर्वपद के उद्गत के उत्तरपद का गति का लोप होने पर उद् काकुद् होता है। इसके बाद ''खरि च'' इससे दकार के चर्त्व होने पर तकार में उत्काकुदशब्द निष्पन्न होता है। इसके बाद बहुव्रीहि समास में उत् का पर काकुदशब्द के सत्व होने पर काकुद शब्द के अन्त्य अकार का ''अलोऽन्त्यस्य'' इस परिभाषा से परिष्कृत प्रोक्त सूत्र से लोप होने पर उत्काकुद् निष्पन्न होता है। इसके बाद पुंसत्व होने पर सु प्रत्यय का प्रक्रिया कार्य में ''वाडवसाने'' इससे वैकल्पिक चत्व होने पर तकार में उत्काकुत् रूप बना। चर्त्व की वैकल्पितता से और उसके अभाव में उत्काकुद् बना। इसी प्रकार विकाकुत्, विकाकुद हो रूप सिद्ध होते हैं।

पाठगत प्रश्न-4

15. ''उद्विभ्यां काकुदस्थ'' इस सूत्र से क्या होता है।
16. ''उद्विभ्यां काकुदस्य'' इस सूत्र का अर्थ क्या है?
17. ''उद्विभ्यां काकुदस्य'' इस सूत्र का उदाहरण क्या है?
18. ''उद्विभ्यां काकुदस्य'' इस सूत्र से विहित अन्त्य का लोप क्यों/कैसे होता है?

(6.7) ''पूर्णाद्विभाषा''

सूत्रार्थ–बहुव्रीहि समास में पूर्णशब्द से पर काकुदशब्द के विकल्प से समासान्त लोप होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से समासात्त का लोप होता है। द्विपदात्यक इस सूत्र में पूर्णात् पञ्चमी एकवचनात्त पद है और ''विभाषा'' यह विकल्प बोधक अव्यय पद है। ''ककुदस्या वस्थायां लोपः'' इस सूत्र से लोप की अनुवृत्ति होती है। ''बहुव्रीहों सक्थ्यक्ष्णोः स्वाङ्गात् षच्'' इससे बहुव्रीहि में पद की अनुवृत्ति होती है। ''समासान्ताः'' यह अधिकृत सूत्र है। और सूत्रार्थ आता है–बहुव्रीहि समास में पूर्णशब्द से पर काकुदशब्द का विकल्प से समासात्त लोप होता है।''

''अलोऽन्त्यस्य'' इस परिभाषा से यह समासान्त लोप काकुद शब्द के अन्त्य अकार का लोप होता है।

उदाहरण–इस सूत्र का उदाहरण है तावत् पूर्ण काकुत्। पूर्णं काकुदं यस्य स लौकिक विग्रह में पूर्ण सु काकुद सु इस अलौकिक विग्रह में ''अनेकमन्यपदार्थे'' इस सूत्र से बहुव्रीहि समास होता है। यहाँ विशेषण के पूर्ण सु इसका पूर्णनिपात होने पर सुप् का लोप होने पर पूर्णकाकुदशब्द निष्पन्न होता है। इसके बाद बहुव्रीहि समास में पूर्णशब्द से पर काकुदशब्द के सत्व से ''अलोऽन्त्यस्य'' परिभाषा से परिष्कृत प्रोक्त सूत्र से काकुटशब्द का विकल्प से अन्त्य अकार का लोप होने पर पूर्णकाकुद् निष्पन्न होता है। इसके बाद पुल्लिंग होने पर सु प्रत्यय प्रक्रिया कार्य में ''वाडवसाने'' इससे वैकल्पिक चर्त्व तकार होने पर पूर्णकाकुत् रूप बना। चर्त्व के वैकल्पिकता के अभाव में पूर्णकाकुद रूप बना। समासान्त लोप के वैकल्पिकत्व से उसके अभाव में सु प्रत्यय की प्रक्रिया कार्य में पूर्णकाकुद्ः रूप बना।

पाठगत प्रश्न-5

19. ''पूर्णाद्विभाषा'' इस सूत्र से क्या कार्य होता है।

20. ''पूर्णाद्विभाषा'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

21. ''पूर्ण काकुदं यस्य इति विग्रह में कितने रूप होते हैं?

22. ''पूर्णाद्विभाषा'' इस सूत्र से विहित अन्त्य का लोप कैसे होता है?

(6.7) ''सुहृद्-दुर्हृदौ मित्रामित्रयोः''

सूत्रार्थ–बहुव्रीहि समास में (सुदुर्भ्यां) सु, दुर् परे हृदय शब्द के समासान्त हृद् भाव का निपात होता है क्रमशः मित्र, अमित्र अर्थों में।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से समासात्त हृद्भाव का निपातन होता है। द्वि पदात्मक सूत्र में सुहृद्-दुर्हृदौ प्रथमा द्विवचनान्त पद है। मित्रामित्रयोः यह सप्तमी द्विवचनात्त पद है। ''बहुव्रीहौ सक्थ्यक्ष्णोः स्वाङ्गात् षच्'' इससे बहुव्रीहि में पद की अनुवृत्ति होती है। ''समासात्ताः'' यह अधिकार सूत्र है। सहृत, च दुर्हृत् च सुहृद्-दुर्हृदौ यह इतरेतर द्वन्द समास है। मित्रं च अमित्रः च मित्रामित्रौ, तयोः मित्रामित्रयोः यहाँ इतरेतरद्वन्द समास है। वस्तुतः निपातन मित्र अर्थ

टिप्पणियाँ

में सुहृत् शब्द और अमित्र अर्थ में दुर्हृत् शब्द:। यह हृदय का हृद भाव ही निपात प्राप्त होता है। यह सूत्र का अर्थ आता है–''बहुव्रीहि समास में सु, दुर् परे हृदयशब्द के समासान्त कह भाव का निपात होने पर प्राप्त होता है। और सूत्रार्थ आता है–''बहुव्रीहि समास में सु, दूर् से परे हृदयशब्द के समासात्त हद् भाव का निपात होने पर क्रमश: मित्र, अमित्र अर्थों में।

उदाहरण–

इस सूत्र का उदाहरण है सुहृत्। शोभनं हृदयं यस्य स (शोभन हृदय है जिसका) सु हृदय सु इस अलौकिक विग्रह में ''अनेकमन्थपदार्थे'' इस सूत्र से बहुव्रीहि समास होने पर और सुप् का लोप होने पर सुहृदय शब्द निष्पन्न होता है। इसके बाद बहुव्रीहि समास में सु निपात से परे हृदयशब्द का सत्व होने से हृदय शब्द के स्थान पर मित्र अर्थ में उक्त सूत्र से समासान्त हृद् आदेश होने पर सु हृद् निष्पन्न होता है इसके बाद पुल्लिंग में सु प्रत्यय होने पर प्रक्रिया कार्य में ''वाडवसाने'' इसे वैकल्पिक चर्त्व होने पर तकार में सुहृत्' रूप बना। चर्त्व के वैकल्पिकता से उसके अभाव पक्ष में सुहृद् रूप बना। इसी प्रकार अमित्र अर्थ में तो दुर्हत्, दुर्हृद् ये दो रूप बने।

(6.7) ''उर: प्रभृतिभ्स: कन्''

सूत्रार्थ–उर: आदि तक बहुव्रीहि के समासान्त तद्धितसंज्ञक कप् प्रव्यय होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से समासान्त कप् प्रत्यय होता है। द्विपदात्मक इस सूत्र में उर:प्रभृतिभ्य: यह पञ्चमी बहुवचनात्त पद है। रूप् यह प्रथमा एकवचनात्त पद है।'' बहुव्रीहौ सक्थ्यक्ष्णो: स्वाङ्गात् षच्'' इससे बहुव्रीहि में पद की अनुवृत्ति आती है। और विभक्ति विपरिणाम से बहुव्रीहि होती है। उरस् आदि शब्द आदि में है जिसके ते उर:प्रभृतय: तेभ्य उर:प्रभृतिभ्य: इस पद में तद्गुणसंविज्ञान बहुव्रीहि समास होता है। उर: प्रभृतिभ्य: पद बहुव्रीहि का विशेषण है। उससे तदत्तविधि में उर:प्रभृत्यत्त से बहुव्रीहि प्राप्त होता है। ''प्रत्यय:'', ''परच'', ''तद्धिता:'', ''समासान्ता:'' ये अधिकार सूत्र हैं। और सूत्रार्थ आता है उरस् आदि से बहुव्रीहि के समासान्त तद्धितसंज्ञक कप् प्रत्यय होता है।

उदाहरण–इस सूत्र का उदाहरण है–तावद् व्यूटोरस्क:। व्यूढम् उर: यस्य स इस लौकिक विग्रह में व्यूढ़ सु उरस सु इस अलौकिक विग्रह में ''अनेकमन्यपदार्थे'' इस सूत्र से बहुव्रीहि समास होता है। इसके बाद ''सप्तमीविशेषणे बहुव्रीहौ'' इस सूत्र से विशेषण के व्यूढ सु का पूर्व निपात होने पर व्यूढ सु उरस् सु होने पर समास का प्रातिपदिकत्व होने से ''सुपो धातुप्रातिपदिकयो:'' इससे सुबन्त के दो सु प्रत्ययों का लोप होने पर और गुण होने पर व्यूढोरस् होता है। व्यूटोरस बहुव्रीहिसंज्ञक उरस् शब्द से प्रकृत सूत्र से समासात्त में रूप् प्रत्यय होने पर पकार के तहलन्त्यम्'' इससे इत्संज्ञा होने पर ''तस्य लोप:'' इससे लोप होने पर व्यूढोरस् क इस स्थिति में प्रक्रिया कार्य में सर्वसंयोग होने पर व्यूढोरस्क शब्द निष्पन्न होता है। इसके बाद पुल्लिंग होने पर सु प्रत्यय होने पर व्यूढोरस्क: रूप बना। इसी प्रकार प्रियं सर्पि: यस्य स इस विग्रह में प्रियसर्पिष्क: इत्यादि इस सूत्र का उदाहरण है।

समासात्त कप् प्रत्यय के आलोचन प्रसङ्ग में क्वचिद् व्यूढोरस्कः इत्यादि में विसर्ग का सकार आदेश और क्वचित् प्रियसर्पिष्कः इत्यादि में षकार आदेश होता है। सकार आदेश विधायक सूत्र अवतरित हो रहा है।

(6.10) ''सोडपदादौ''

सूत्रार्थ–पाश-कल्प-क-काम्यच् आदि प्रत्यय परे विसर्ग को संहिता की विवक्षा में सकार आदेश होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से विसर्ग का सकार आदेश होता है। द्विपदात्मक इस सूत्र में सः अपदादौ यह पदच्छेद है। सः प्रथमा एकवचनान्त पद है। अपदादौ यह सप्तमी एकवचनात्त पद है। सः यहाँ अकार उच्चारणार्थक है। ''विसर्जनीयस्य सः'' इस सूत्र से विसर्जनीयस्य पद की अनुवृत्ति होती है। ''कुप्वो क पौ च'' इस सूत्र से कुप्वोः पद की अनुवृत्ति आती है। ''तयोर्बाषचि संहितायाम्'' इस सूत्र से संहितायाम् पद की अनुवृत्ति आती हैं। न पदादिः अपदादिः, इस अपदादि में न-समास होता है। अपदादौ का कुप् व इस अन्वय से अपद आदि का कुप् वु अर्थ होता है। और अपपदादि में क वर्ग में और पवर्ग में परे विसर्ग के स्थान पर स् आदेश होता है। संहिता की विवक्षा में'' यही सूत्रार्थ आता है। अपदादि कवर्ग पवर्ग को पाश-कल्प-क-कामी आदि चार प्रत्ययों का ही संभव होता है। और ''पाश-कल्प-क-कामी आदि प्रत्यया परे विसर्ग का सकार आदेश संहिता की विवक्षा में होता है।''

उदाहरण–उस सूत्र के पाश पर उदाहरण पयस्याशम्। कल्पपि भरे उदाहरण है पयस्कल्पम्। काम्यच् होने पर उदाहरण है पयस्काम्यम् प्रकृते च व्यूढम् उरः यस्थ स इस लौकिक विग्रह में व्यूढ़ सु उरस् सु इस अलौकिक विग्रह में ''अनेकमन्प पदार्थे'' इस सूत्र से बहुव्रीहि समास होता है। इसके बाद ''सप्तमी विशेषणे बहुव्रीहौ'' इस सूत्र से विशेषण का पूर्व निपात होने पर प्रातिपदिकत्व और सुप् का लोप होने पर गुण होने पर व्यूढोरस होने पर इसके बाद ''उरः प्रभृतिभ्यः रूप्'' इससे समासात्त में रूप् प्रत्यय होने पर व्यूढोरस् क होता है। तब ''खरवसानयोर्बिसर्जनीयः'' इससे सकार का खर प्रत्याहार परे विसर्ग आदेश होने पर व्यूढोरः क होने पर प्रकृतसूत्र से अपदादि प्रत्ययपरक विसर्ग का स आदेश होने पर पुल्लिंग में सु प्रत्यय में व्यूढोरस्कः रूप बना।

पाठगत प्रश्न-6

23. ''सुहृद्-दुर्हृदौ मित्रामित्रयोः'' इस सूत्र से क्या होता है?

24. ''सुहृद्-दुर्हृदौ मित्रामित्रयोः'' इस सूत्र क्या अर्थ है?

25. ''सुहृद्-दुर्हृदौ मित्रामित्रयोः'' इस सूत्र का उदाहरण क्या है?

26. ''उरः प्रभृतिभ्यः कप्'' इस सूत्र का अर्थ क्या है?

टिप्पणियाँ

27. ''उरः प्रभृतिभ्यः कप्'' इस सूत्र का उदाहरण क्या है?

28. ''सोऽपदादौ'' इस सूत्र का अर्थ क्या है?

29. ''सोडपदादौ'' इस सूत्र का उदाहरण क्या है?

(6.11) ''इणः षः'' (1.3.37)

सूत्रार्थ–पाश-कल्प-क-कामच् आदि प्रव्ययों में परे इण के उत्तरपद के विसर्ग का षकार आदेश संहिता की विवक्षा में होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से विसर्ग का षकार आदेश होता है। ''सोऽपदादौ'' इससे प्राप्त सत्त्व के बाधकता से यह सूत्र अपवाद सूत्र है। द्विपदात्मक इस सूत्र में इणः यह पञ्चमी एकवचनात्त पद है। षः प्रथमा एकवचनात्त पद है। षः यहाँ अकार उच्चारणार्थक है। ''सोडपदादौ'' इस सूत्र से अपदादौ पद की अनुवृत्ति होती है। ''विसर्जनीयस्य सः'' इस सूत्र से विसर्जननीयस्य पद की अनुवृत्ति आती है। ''कुप्वो क पौच'' इस सूत्र से कुप्वोः पद की अनुवृत्ति होती है। ''तयोर्थ्वावचि संहिताथाम्'' इस सूत्र से संहितायाम् पद की अनुवृत्ति होती है। न पदारिः अपदादिः, तस्मिन् अपदादौ यहाँ नञ् समास है। अपदादौ का कुप्वोः के साथ अन्वय से अपदादि में कुप्वोः यह अर्थ होता है। और अपदादि में कवर्ग में और पवर्ग परे होने पर इण के परे विसर्ग के स्थान पर स् आदेश संहिता की विवक्षा में होता है। यही सूत्र का अर्थ आता है। अपदादि कवर्ग पवर्गत्व पाश-कल्प-क-काम्यं आदि चार प्रत्ययों में ही सम्भव होता है। और ''पाश-कल्प-क-कामी आदि प्रत्ययों में परे इण परे विसर्ग के संहिता के विवक्षा में विसर्ग के स्थान- पर षकार आदेश होता है।'' यही सूत्र का अर्थ आता है।

उदाहरण–इस सूत्र पा शप् परे उदाहरण है–सर्पिष्पाशम्। कल्प्अप्परे उदाहरण है–यजुष्कल्पम्। कामी अच् परे उदाहरण है–सर्पिष्काम्यम्। और प्रकृत में प्रियं सर्पिः यस्य स इस लौकिक विग्रह में प्रिय सु सर्पिस सु इस अलौकिक विग्रह में ''अनेकमन्यपदार्थे'' इस सूत्र से बहुव्रीहि समास होने पर विशेषण का पूर्व निपात होने पर प्रातिपदिकत्व होने से और सुप् का लोप होने पर गुण होने पर प्रिय सर्पिस् होने पर इसके बाद ''उरः प्रभृतिम्यः कप्'' इस प्रकृत सूत्र से समासात्त में कप् प्रत्यय होने पर प्रियसर्पिस् क होता है।

तब ''खरवसानयोर्विसर्जनीयः'' इससे सकार को विसर्ग आदेश होने पर प्राप्त सादेश को बांध कर इणः के परे ष आदेश होने पर पुल्लिंग होने पर प्रियसर्पिष्कः रूप बना।

प्रकरण उपयोगिता से विसर्ग के स्थान पर षत्व-सत्व विधायक सूत्र प्रवृत्त होता है।

(6.12) ''कस्कादिषु च'' (1.3.41)

सूत्रार्थ–कस्कादि में इण के उत्तर विसर्ग का षकार आदेश होता है। अन्यत्र तो सकार आदेश ही होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधि सूत्र है। इस सूत्र से विसर्ग का षकार आदेश और सकार आदेश होता है। द्विपदात्मक इस सूत्र में कस्कादिशु यह सप्तमी बहुवचनात्त पद है। और ''च'' अव्यय पद है। इवः षः सम्पूर्ण सूत्र की अनुवृत्ति आ रही है। ''सोऽपदादौ'' इस सूत्र से सः पद की अनुवृत्ति आती है। ''विसर्जनीयस्य सः'' इस सूत्र से विसर्जनीयस्य पद की अनुवृत्ति आ रही है। ''कुत्वो क पौच'' इस सूत्र से कुप्नोः पद की अनुवृत्ति आ रही है। ''तयोर्थ्वावचि संहितायाम्'' इस सूत्र से संहितायाम् पद की अनुवृत्ति होती है। कास्कशब्द आदि येषां (कास्क शब्द है आदि में जिसके) कस्कादयः तेषु कस्कादिषु यहाँ तद्गुणसंविज्ञान बहुव्रीहिः समास होता है। और कस्कादि शब्दों में इण् प्रव्याहार से परे विसर्जनीयस्य के स्थान पर सकार आदेश होता है। कस्कादि में अन्यत्र विसर्जनीय के स्थान पर सकार आदेश होता है यहीं सूत्र का अर्थ आता है।

उदाहरणः–इस इण् परकत्व सूत्र का उदाहरण है–सपिष्कुण्डिका। सर्पिः कुण्डिका इस स्थिति में कस्कादिगण में पठित सर्पिः के इण के इकार से परे विसर्ग के प्रकृत सूत्र से षकार आदेश होने पर सर्विष्कुण्डिका रूप होता है। इष्परकत्व अभाव में कस्कः उदाहरण है। ''नित्यवीप्सयोः'' इस सूत्र से वीप्सा अर्थ में कः इस पद के द्वित्व होने पर कः क इस स्थिति में विसर्ग के इण् परकत्व अभाव से प्रकृत सूत्र से यकार आदेश होने पर कस्कः रूप होता है।

पाठगत प्रश्न-7

30. ''इणः षः'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?
31. ''इणः षः'' इस सूत्र का उदाहरण क्या है?
32. ''प्रियसर्पिष्कः यहाँ षत्व आदेश किस सूत्र से होता है?
33. ''कस्कादिषु च'' इस सूत्र का क्या अर्थ है।
34. ''कस्कादिषु च'' इस सूत्र का उदाहरण क्या है?
35. ''सर्पिष्कुण्डिका यहाँ षत्व आदेश किस सूत्र से होता है?
36. कस्कः यहाँ सत्व आदेश किस सूत्र से होता है।

(6.13) ''इनः स्त्रियाम्'' (5.4.142)

सूत्रार्थ–इन्नन्त बहुव्रीहि के समासात्तद्धितसंज्ञक रूप् प्रत्यय होता है। स्त्रीत्व विवक्षा में।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से समासात्त रूप् प्रत्यय होता है। द्विपदात्मक इस सूत्र में इनः पञ्चमी एक वचनान्त पद है। स्त्रियाम् सप्तमी एकवचनात्त पद है। ''बहुव्रीहौ सक्थ्यक्ष्णोः स्वाङ्गात् षच्'' इससे बहुव्रीहि में पद की अनुवृत्ति आती है। और विभक्तिविपरिणाम से बहुव्रीहेः होता है। ''उरःप्रभृतिभ्यः रूप्'' इससे रूप् की अनुवृत्ति होती है। इमः यह पद

टिप्पणियाँ

बहुव्रीहि का विशेषण है। उससे तङतविधि में इन्नन्त बहुव्रीहे पद प्राप्त होता है। ''प्रत्ययः'', ''परश्च'', ''तद्धिताः'', ''समासान्ताः'' ये अधिकार सूत्र हैं। और सूत्रार्थ आता है। इन्नन्त बहुव्रीहि का समासात्त तद्धितसंज्ञक रूप् प्रव्यय होता है स्तीत्व विवक्षा में।

उदाहरण–इस सूत्र का उदाहरण है तावत् बहुदण्डिका नगरी। दण्डः अस्था अस्ति इस विग्रह में ''अतइनिठनौ'' इस सूत्र से इनि प्रत्यय होने पर दण्डी शब्द निष्पन्न होता है। वहवः दण्डिनों यस्यां सा इस बहु जस् दण्डिन जस् इस अलौकिक विग्रह में अनेकमन्यपदार्थे'' इस सूत्र से बहुव्रीहि समास होता है। इसके बाद ''सप्तमीविशेषणे बहुव्रीहौ'' इस सूत्र से विशेषण का बहु जस् का पूर्व निपात होने पर बहु जस् दण्डिन् जस् होने पर समास का प्रातिपदिकत्व से ''सुपो धातुप्रातिपदिकयोः'' इस सुप् दो जस् प्रत्ययों का लोप होने पर बहुदण्डिन् होता है। बहुदण्डिन इस बहुव्रीहि संज्ञक इवन्तत्व की स्त्रीत्व विवक्षा में प्रकृतसूत्र से समासान्त में कप् प्रत्यय होता है। पकार का ''हलन्त्यम्'' से इत्संज्ञा होने पर ''तस्य लोपः'' इससे लोप होने पर बहुदण्डिन स्थिति होने पर नकार का लोप होने पर सर्वसंयोग से निष्पव बहुदण्डिन क स्थिति होने पर नकार का लोप होने पर सर्वसंयोग से निष्पव बहुदण्डिक शब्द से ''अजाद्यतष्टाप्'' इस सूत्र से टाप् प्रत्यय होने पर प्रक्रिया कार्य में सर्वसंयोग होने पर बहुदण्डिक शब्द निष्पन्न होता है। इसके वाद सु प्रत्यय प्रक्रिया कार्य में बहुदण्डिका रूप बना।

(6.14) ''शेषाद्विभाषा''

सूत्रार्थ–अनुक्त समासान्त से बहुव्रीहि का समासान्त तद्धिकसंज्ञक् कप् प्रत्यय विकल्प से होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से समासात्त कप् प्रत्यय विकल्प से होता है। द्विपदात्मक इस सूत्र में शेषात् यह पञ्चमी एकवचनात्त पद है तथा विभाषा यह प्रथमा एकवचनान्त पद है। ''बहुव्रीहौ सक्थ्यक्ष्णोः स्वाङ्गात् वच्'' इससे बहुव्रीहि में अनुवृत्ति आती है। और उसको विभक्ति विपरिणाम से ''बहुव्रीहेः'' होता है। ''उरः प्रभृतिभ्यः कप्'' इस सूत्र से कप् की अनुवृत्ति होती है। ''प्रत्ययः'', ''परश्च'', ''ग्तद्धिताः'' ''समासान्ताः'' में अधिकृत सूत्र हैं। जिससे समासान्त प्रत्यय विहित नहीं है वह ही शेष शब्द से ग्रहण किया जाता है। शेषात् नाम अनुक्त समासान्तात् (बिना कहा हुआ समासान्त का है)। और सूत्र का अर्थ आता है कि ''अनुक्त समासान्त से बहुव्रीहि का समासान्त तद्धित संज्ञक कप् प्रत्यय का विकल्प से होता है।''

उदाहरण–इस सूत्र का उदाहरण है महायशक्कः। महद् यशोयस्थ स इस लौकिक विग्रह में महत् सु यशस् सु इस अलौकिक विग्रह में ''अनेकमन्यपदार्थे'' इस सूत्र से बहुव्रीहि समास होता है। इसके बाद ''सप्तमी विशेषणे बहुव्रीहौ'' इस विशेषण के महत् सु का पूर्वनिपात होने पर महत् सु यशस् सु इस स्थिति में ''कृत्तद्धितसमासाश्च'' इससे समास का प्रातिपदिकत्व होने से ''सुपोधतुप्रातिपदिकयोः'' इस सूत्र से सुबन्त के दो सु प्रत्ययों का लोप होने पर महत् यशस् होने पर ''आन्महतः समानाधिकरणजातीययोः'' इस सूत्र से महत् के तकार का आकार आदेश होने पर ''अकः सवर्णे दीर्घः'' इस सवर्ण हीर्घ होने पर महायशस् शब्द निष्पन्न होता है।

महायशस् इस बहुव्रीहि संज्ञक अनुक्त समासान्तत्व से प्रकृतसूत्र से विकल्प से समासान्त में कप् प्रत्यय होने पर पकार का ''हलन्त्यम्'' इससे इत्संज्ञा होने पर ''तस्यलोपः'' इससे लोप होने पर महायशस् क इस स्थिति में ''खखसानयोर्विसर्जनीयः'' इससे खर् प्रत्यय परे सकार का विसर्ग आदेश होने पर महायशः क होने पर ''सोऽपदादौ'' इस सूत्र से विसर्ग का सकार आदेश होने पर सर्वसंयोग होने पर महायशस्क शब्द निष्पन्न होता है। इसके बाद पुल्लिंग होने पर सु प्रत्यय होने पर महायशस्कः रूप बना। कप् के विकल्पता के अभाव में सु प्रत्यय होने पर प्रक्रिया कार्य में महायशाः रूप बना।

पाठगत प्रश्न-8

37. ''इनः स्त्रियाम्'' इस सूत्र का क्या अर्थ है?

38. ''इन स्त्रियाम्'' इस सूत्र का उदाहरण क्या है?

39. ''शेषाद्विभाषा'' इस सूत्र का अर्थ क्या है?

40. ''शेषाद्विभाषा'' इस सूत्र का उदाहरण क्या है?

41. महत् यशः यस्य स इस विग्रह में बहुव्रीहि कौन सा में कितने रूप हैं?

(6.15) ''निष्ठा''

सूत्रार्थ–निष्ठान्त का बहुव्रीहि में पूर्व प्रयोग होता है।

सूत्र व्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से पूर्व निपात होने का विधान है। एकपदात्मक इस सूत्र में निष्ठा प्रथमा एकवचनान्त पद है। ''सप्तमी विशेषणे बहुव्रीहौ'' इस सूत्र से बहुव्रीहौ पद की अनुवृत्ति होती है। ''उपसर्जनं पूर्वम्'' इससे पूर्व क्रियाविशेषण द्वितीया एकवचनान्त की अनुवृत्ति आती है। प्रयुज्यते यह क्रिया पद लिया गया है।'' क्त क्तवतु निष्ठा'' इस सूत्र से विहित स्तक्तवतु प्रत्ययों में निष्ठा संज्ञा होती है। ''प्रत्ययग्रहणे तदन्तग्रहणम्'' इस नियम से निष्ठा की तदत्त विधि में निष्ठान्त प्राप्त होता है। ''प्रत्ययग्रहणे तदन्तग्रहणम्'' इस नियम से निष्ठा का तदन्तविधि में निष्ठान्त पद प्राप्त होता है। बहुव्रीहि समास में निष्ठाप्रत्ययान्त पद पूर्व में प्रयोग होता है यही सूत्र का अर्थ है।

उदाहरण–निष्ठान्त का पूर्वनिपात होने पर युक्तयोगः इसका उदाहरण है। युक्तो योगो येन सः इस लौकिक विग्रह में युक्त सु योग सु इस अलौकिक विग्रह में अन्यपद के अर्थ में विद्यमान युक्त सु का योग सु प्रथमान्त का ''अनेकमन्य पदार्थे'' से बहुव्रीहि समास होने पर समास का ''कृत्तद्धितसमासाश्च'' इससे प्रातिपदिक संज्ञा होने पर ''सुपोधातुप्रातिपदिकयोः'' इस सूत्र से दो सु प्रत्ययों का लोप होने पर युक्त योग होता है। तब प्रोक्त सूत्र से निष्ठान्त मुक्त का पूर्णनिपात होने पर निष्पन्न युक्तयोग से विशेष्य के अनुसार पुल्लिंग होने पर सु प्रत्यय प्रक्रिया कार्य में युक्तयोगः रूप बना।

पाठगत प्रश्न-9

42. ''निष्ठा'' इस सूत्र से क्या होता है?

43. ''निष्ठा'' इस सूत्र का अर्थ क्या है?

44. ''निष्ठा'' इस सूत्र का उदाहरण क्या है?

45. निष्ठा संज्ञा किसमें होती है?

(6.16) ''वाऽऽहिताग्न्यादिषु'' (2.2.37)

सूत्रार्थ–आहितानि (आहित, अग्नि) आदि में बहुव्रीहि समास में निष्ठा प्रत्ययान्त पद को विकल्प से पूर्व प्रयोग होता है यही सूत्र का अर्थ है।

सूत्रव्याख्या–यह विधिसूत्र है। इस सूत्र से विकल्प से पूर्व निपात होता है। द्विपदात्मक इस सूत्र में वा यह विकल्प बोधक अत्यय है। आहिताग्न्यादिषु यह सप्तमी बहुवचनान्त पद है। ''सप्तमी विशेषणे बहुव्रीहौ'' इस सूत्र से बहुव्रीहौ पद की अनुवृत्ति आती है। और उसका आहिताग्न्यादिषु इस अन्वय से आहिताग्न्यादिषु बहुव्रीहिषु प्राप्त होता है। आहिताग्निः आदि येषां ते आहिताग्न्यादयः, तेषु आहिताग्न्यादिषु इसमें तद्गुण संविज्ञान बहुव्रीहि समास होता है। ''उपसर्जनं पूर्वम्'' इससे पूर्वम् कियाविशेषण द्वितीया एकवचनान्त की अनुवृत्ति होती है। प्रयुज्यते यह क्रियापद लिया गया है। ''निष्ठा'' इस सूत्र से निष्ठा की अनुवृत्ति होती है। ''प्रत्यय ग्रहणे तदन्तग्रहणम्'' इस नियम से निष्ठा का तदन्तविधि में निष्ठान्तम् पद प्राप्त होता है। आहिताग्नि आदि बहुव्रीहि समास में निष्ठाप्रत्ययान्त पद को विकल्प से पूर्व प्रयोग होता है। यह सूत्र का अर्थ है।

उदाहरण–निष्ठान्त का विकल्प से पूर्वनियात होने पर आहिताग्निः अग्न्याहितः उदाहरण है। आहिता अग्न्यः येन सः इस लौकिक विग्रह में आहित जस् अग्नि जस् इस अलौकिक विग्रह में अन्यपदार्थ में विद्यमान आहित जस् का अग्नि जस् का और प्रथमा का ''अनेकमन्यपदार्थे'' इससे बहुव्रीहि में सुप् का लोप होने पर आहित अग्नि होता है। तब आहिताग्निगण में पाठ से प्रोक्त सूत्र से बहुव्रीहि में विकल्प से निष्ठान्त आहित का पूर्वनिपात होने पर सवर्णदीर्घ निष्पन्न आहिताग्नि विशेष्य के अनुसार पुल्लिंग होने पर सुप्रत्यय के प्रक्रिया कार्य में आहिताग्निः रूप बना। पूर्व निपात के वैकल्पिकता के अभाव में अग्नि आहित होने पर यण् निष्पन्न होने पर अग्न्याधित शब्द से पुल्लिंग में सु प्रत्यय होने पर प्रक्रियाकार्य में अग्न्याहितः रूप बना।

पाठगत प्रश्न-10

46. ''वाऽऽहिताग्न्यादिषु'' इस सूत्र से क्या होता है?

47. ''वाऽऽहिताग्न्यादिषु'' इस सूत्र का अर्थ क्या है?

48. ''वाऽऽहिताग्न्यादिषु'' इस सूत्र का उदाहरण क्या है?

49. अग्न्यादितः आहिताग्निः ये दो रूप कैसे होते हैं?

पाठ सार

इस पाठ में बहुव्रीहि समास का अवशिष्ट अंश प्रस्तुत किया जा रहा है। बहुव्रीहि में समासान्त षच् प्रत्यय विधायक ''बहुव्रीहौ साक्थ्यक्ष्णोः स्वाङ्गात् पच्'' सूत्र है। ''द्वित्रिभ्यांष मूर्ध्नः'' यह ष प्रत्यय विधायक सूत्र है। ''द्वित्रिभ्यांष मूर्ध्नः'' यह अप् प्रत्यय विधायक सूत्र है। ''अन्तर्बहिभ्यांच लोम्नः'' विधायक सूत्र है। इन चारों सूत्रों व्याख्या इस पाठ में की गई है। यहाँ पर ''पादस्यलोपोऽहस्त्यादिभ्यः'', ''संख्यासुपूर्वस्य'', ''उद्विभ्यांकाकुदस्य'', ''पूर्णाद्विभाषा'' इन समासान्त लोप विधायक सूत्रों की व्याख्या की गई है। प्रसंग से ''सुहृद्-दुर्हृदौ मित्रामित्रयोः'' हृदयशब्द के छह आदेश निपात विधायक सूत्र की भी व्याख्या की गई है। निपातनं भवति इसका वर्णन किया जा रहा है। बहुव्रीहि में निपात विषय में यहाँ आलोचन होता है। इसके बाद धमास विधायक सूत्र वर्णन अवसर पर उसके उदाहरणों में विसर्ग के आदेश विधान के लिए जो सूत्र अपेक्षित हैं उनका भी यहाँ संग्रहण किया गया है। समासान्त के कप् प्रत्यय के विज्ञायक सूत्र है यहाँ ''उरः प्रमृतिभ्यः कप्'' ''इनःस्त्रियाम्'', ''शेषाद्विभाष'' इन तीनों सूत्रों की व्याख्या की गई है।

समासान्तपरि आलोचन अवसर पर ''सोडपदादौ'' यह सकार विधायक सूत्र, ''इणःषः'', ''कस्कादिषु च'' इस षकार आदेश विधायक सूत्रों की व्याख्या भी की गई है। इसके बाद बहुव्रीहि में पूर्वनिपात विधायक सूत्र ''निष्ठा'' और ''वाऽऽहिताग्न्यादिषु'' प्रस्तुत किये गये हैं। इस पाठ में बहुव्रीहि समास का अपशिष्ट अंश प्रस्तुत किया गया है।

पाठान्त प्रश्न

1. ''बहुव्रीहौ सक्थ्यक्ष्णोः स्वाङ्गात् षच्'' इस सूत्र की व्याख्या की गई है?
2. ''द्वित्रिभ्यां ष मूर्ध्नः'' इस सूत्र की व्याख्या करो?
3. ''अन्तर्बहिर्भ्यां च लोम्नः'' इस सूत्र की व्याख्या करो?
4. ''पादस्य लोपोऽहस्त्यादिभ्यः'' इस सूत्र की व्याख्या करो?
5. ''संख्यासुपूर्वस्य'' सूत्र की व्याख्या करो?
6. ''उद्विभ्यांकाकुदस्य'' सूत्र की व्याख्या करो?
7. ''उरः प्रभृतिभ्यः कप्'' सूत्र की व्याख्या करो?
8. ''दीर्घसक्थः'' रूप को (साधो) सिद्ध कीजिये?
9. अन्तर्लोमः रूप को सिद्ध कीजिये?

10. द्विमूर्धः रूप को सिद्ध कीजिये?
11. व्याघ्रपात् रूप को सिद्ध कीजिये?
12. द्विपात रूप को सिद्ध कीजिये?
13. उत्काकुद् रूप को सिद्ध कीजिये?
14. ''पूर्णकाकुदः रूप को सिद्ध कीजिये?
15. व्यूढ़ोरस्कः रूप को सिद्ध कीजिये?
16. महायशस्कः रूप को सिद्ध कीजिये?

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

उत्तर-1

1. स्वाङ्गवाची सक्थ्यक्ष्यन्त बहुव्रीहि के समासान्त तद्धितसंज्ञक को षच प्रत्यय होता है।
2. दीर्घे सक्थिनी यस्य सः इस विग्रह में।
3. जलजाक्षी।
4. बहुव्रीहि समास में द्वि, त्रि शब्दों से परे मूर्ध्न समासान्त तद्धित संज्ञक को ष प्रत्यय होता है।
5. द्विमूर्धः।

उत्तर-2

6. बहुव्रीहि समास में अन्तः और बहि शब्द के परे लोमन् समासान्त तद्धित संज्ञक को अप् प्रत्यय होता है।
7. अन्तर्लोमः।
8. समासान्त लोप होता है।
9. बहुव्रीहि समास में हस्ति आदि से वर्जित उपमान से परे पाद शब्द के समासान्त का लोप होता है।
10. व्याघ्रपात्।

उत्तर-3

11. समासान्त लोप होता है।

12. बहुव्रीहि समास में संख्यावाचक पूर्व सु अव्ययपूर्व का पादशब्द के समासान्त लोप होता है?

13. द्विपात्।

14. अलोऽन्त्यस्य इस परिभाषा से।

उत्तर-4

15. समासान्त लोप होता है।

16. बहुव्रीहि समास में उद्, वि परे काकुदशब्द के समासान्त लोप होता है?

17. उत्काकुत्।

18. अलोऽन्त्यस्थ परिभाषा से।

उत्तर-5

17. समासान्त लोप।

20. बहुव्रीहि समास में पूर्णशब्द से परे काकुदशब्द का विकल्प से समासान्त का लोप होता है।

21. तीन रूप।

22. अलोऽन्त्यस्य परिभाषा से।

उत्तर-6

23. समासान्त हृद् भाव निपात।

24. बहुव्रीहि समास में सु, दुर् से परे हृदय शब्द के समासान्त हृद् भाव का निपात होने पर क्रमशः, मित्र, अमित्र अर्थों में।

25. सुहृत्।

26. उरस् आदि तब से बहुव्रीहि समासान्त तद्धित संज्ञक कप् प्रत्यय होता है।

27. व्यूढोरस्कः।

28. संहिता की शिक्षा में पाश-कल्प-क-काम्य (कामी) प्रत्यय परे विसर्ग का सकार आदेश होता है।

29. पयस्पाशम्।

उत्तर-7

30. पाश्-कल्प-कामी आदि प्रत्ययों से परे इण के उत्तर पद के विसर्ग को षकार आदेश होता है।

टिप्पणियाँ

31. सर्पिष्पाशम्।

32. इणः षः इस सूत्र से।

33. कस्कादि गण में पठित इण प्रत्यय के उत्तर का विसर्ग का षकार होता है अन्य जगह तो सकार आदेश होता है।

34. सर्पिष्कुण्डिका।

35. ''कस्कादिषु च'' सूत्र से।

36. ''कस्कादिषु च'' सूत्र से।

उत्तर-8

37. स्त्रीत्व विवक्षा में इन्नन्त बहुव्रीहि का समासान्त को तद्धितसंज्ञक कप् प्रत्यय होता है।

38. बहुदण्डिका नगरी।

39. अनुक्त समासान्त बहुव्रीहि के समासान्त तद्धितसंज्ञक कप् प्रत्यय विकल्प से होता है।

40. महायशस्कः।

41. दो रूप।

उत्तर-9

42. पूर्वनिपात।

43. बहुव्रीहि में निष्ठान्त पूर्व में होता है।

44. युक्त योगः।

45. क्तबतु प्रत्ययों में निष्ठा संज्ञा होती है।

उत्तर-10

46. पूर्वनिपात।

47. आहिताग्नि आदि बहुव्रीहि में निष्ठान्त का पूर्व विकल्प से होता है।

48. आहिताग्निः, अग्नाहितः ये दो उदाहरण है।

49. विकल्प से निष्ठान्त आहित का पूर्वनिपात प्रक्रिया में आहिताग्निः रूप बनता है। पूर्व निपात के विकल्प के अभाव में अग्न्याहितः रूप बना।

षष्ठ पाठ समाप्त